17–5–67 ओमशांति प्रातःक्लास बुधवार

सारे सृष्टि चक्र में वा ड्रामा में बाप एक ही बार आते हैं। और कोई सत्संग आदि में ऐसे नहीं समझते होंगे। ना वो बाप है ना वो बच्चे हैं। वो तो वास्तव में फालोवर्स भी नहीं हैं। सब झूठ ही झूठ है। यहां तो बच्चे भी हो तो स्टुडेंट्स भी हो तो फालावर्स भी हो। बच्चों को साथ में ले जावेंगे। बाबा जावेंगे तो फिर बच्चे भी इस छी2 दुनियां से जाकर अपनी गुल2 दुनियां में राज्य करेंगे। यह तुम बच्चों की बुद्धि में आना चाहिए। इसमें अंदर रहने वाली जो आत्मा है वो बहुत खुश होती है। तुम्हारी आत्मा को बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप आया हुआ है जो कि सबका बाप है। यह भी सिर्फ तुम बच्चों को ही समझ है। बाकी सारी दुनियां में तो बेसमझ ही बेसमझ हैं। बाप बैठ तुमको समझाते हैं कि रावण ने तुमको कितना बेसमझदार बना दिया है। बाप आकर समझदार बनाते हैं। सारे विश्व पर राज्य करने लायक इतने समझदार बनते हो। यह स्टुडेंट लाइफ भी एक ही बार होती है। जबकि भगवान आकर पढ़ाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में यह है। वो ...जो अपने सारे दिन धंधे–धोरी आदि में ही फंसे रहते हैं उनको कब बुद्धि में यह आ नहीं सकता कि भगवान हमको पढ़ाते हैं। उनको तो अपना धंधा आदि ही याद रहता है। तो तुम बच्चे जबकि जानते हो कि भगवान हमको पढ़ाते हैं तो बच्चों को सदैव कितना हर्षित रहना चाहिए। और तो सब है पाई–पैसे वालों के बच्चे। मिट्टी में मिलने वालों की औलाद। यहां तो तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। कोई तो बहुत हर्षित रहते हैं। कोई तो कहते हैं कि बाबा हमारी मुरली नहीं चलती है। यह होता है। अरे, मुरली कोई बहुत थोड़ी है। तो जैसे कि भक्ति मार्ग में साधु–संत आदि के पास भी जाते हैं तो कहेंगे कि हमको भगवान कैसे मिले?परंतु वो जानते तो कुछ भी नहीं हैं ना। सिर्फ उंगली से ऐसे इशारा ही करेंगे कि भगवान को याद करो। बस। .....

.....यह ड्रामा ही ऐसा (बना) हुआ है। फिर भी भूल जावेंगे। ऐसे नहीं कि तुम्हारे में भी सब बाप और रचना को जानते हैं। कई2 तो चलन ऐसी चलते हैं जो कि बात मत पूछो। वो नशा ही उड़ जाता है। अभी तुम बच्चों का पैर पुरानी दुनियां पर तो जैसे कि है ही नहीं। तुम जानते हो कि कलियुग की दुनियां से अब पैर उठ गया है। बोट का लंगर उठ गया है। अब हम जा रहे हैं। बाप हमको कहां ले जावेंगे वो भी बुद्धि में है ;क्योंकि बाप खिवैया भी है तो बागवान भी है। कांटों को आकर फूल बनाते हैं। उन जैसा बागवान कोई है नहीं। कांटों को फूल बना दिया यह जादूगरी कोई कम है। कौड़ी वर्थ आत्मा को हीरे वर्थ बनाते हैं। आजकल जादूगरी बहुत निकली हुई है। यह है ही ठगी की दुनियां। बाप है सतगुरू। कहते भी हैं सतगुरू अकाल। बहुत धुन से कहते हैं। अब जबकि खुद कहते हैं कि सतगुरू एक है, सर्व का सदगति दाता एक है तो फिर अपने को गुरू क्यों कहलाते हो?ना वो समझते हैं ना ही चेले लोग भी समझ सकते हैं। इस पुरानी दुनियां में रखा ही क्या है?बच्चों को जब पता होता है कि बाप नया मकान बना रहे हैं तो कौन मूर्ख होगा जो नये घर से नफरत और पुराने से प्रीत रखेगा?बुद्धि में नया घर ही याद रहता है। अभी तो तुम हो बेहद बाप के बच्चे। तुम जानते हो कि अब हम अपने नये वर्ल्ड में चलते हैं। न्यू वर्ल्ड का कितना नाम है। सतयुग, हैविन ,पैराडाइज, कृष्णपुरी और विष्णुपुरी ,वैकुण्ठ, स्वर्ग। पुरानी दुनियां का क्या नाम है?क्या कहेंगे पुरानी दुनियां में तो दुःख ही दुःख है। इनका नाम ही है हेल। कांटों का जंगल रौरव नर्क। इनका भी अर्थ कोई भी विद्वान ,पंडित समझते नहीं हैं। पत्थर बुद्धि हैं ना। भारत का ही देखो क्या हाल है?बाप कहते हैं कि सब पत्थर बुद्धि हैं। सतयुग में सब हैं पारस बुद्धि। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। यहां सब हैं पत्थर बुद्धि। यहां तो है ही प्रजा का राज्य। इसलिए ही सभी के स्टैम्प बनाते हैं। विलायत में सिर्फ राजा–रानी का ही स्टैम्प बनाते हैं। अभी सिर्फ रानी का ही बनाते हैं। राजा साथ में

नहीं देते हैं ;क्योंकि वो है तो प्रजा घराने का ना। उनसे दिल लग गई तो शादी कर ली। इसलिए उनको राजा थोड़े ही कहेंगे। तो तुम बच्चों की बुद्धि में यह रहना चाहिए कि उंच ते उंच है बाप। फिर सेकेंड नम्बर में उंच ते उंच कौन?ब्रह्मा,विष्णु,शंकर की तो कोई उंचाई ही नहीं। उंचाई तो निचाई भी है। शंकर का कुछ भी नहीं है। उंच ते उंच है भगवान। उनका तो गायन है। शंकर की तो पहरावस (पहरावा) आदि ही कैसी बना दी है। पीते थे, धतूरा खाते थे। यह भी तो किसी की इन्सल्ट करना ही है ना। कोई सुने तो कहेंगे भारतवासी हिंदुओं का यह है हाल। वहां तो यह बात ही नहीं होती। वह अपने धर्म को ही भूले हुये हैं। अपने देवताओं के लिए क्या2 कहते रहते हैं। कितनी बेइज्जती करते हैं। तब बाप कहते हैं कि मेरी भी बेइज्जती, शंकर की भी बेइज्जती, ब्रह्मा की भी बेइज्जती। विष्णु की नहीं करते हैं। वास्तव में गुप्त कहेंगे ;क्योंकि विष्णु ही राधा–कृष्ण है। उनकी करते तो भी अच्छा था। छोटा बच्चा तो महात्मा से भी उंचा गाया जाता है। वो तो पाप आदि करके पीछे सन्यासी बनते हैं। वो छोटा बच्चा है ही पवित्र। पाप आदि को जानते ही नहीं। तो उंच ते उंच है शिवबाबा फिर ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को तो गालियां ही देते हैं। यह भी बिचारों को पता नहीं कि प्रजापिता ब्रह्मा कहां होना चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा को तो दिखाते भी शरीरधारी हैं। अजमेर में उनको मंदिर भी है। दाढ़ी–मूंछ देते हैं ब्रह्मा को। विष्णु और शंकर की तो क्लीन शेव रखते हैं। तो यह इस समय की बात है कि प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्मवतन में कैसे होगा?वो तो यहां होना चाहिए। इस समय ब्रह्मा की कितनी सन्तान है। लगा हुआ है प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां। इतने ढेर हैं। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। चैतन है तो जरूर कुछ करते भी होंगे। क्या प्रजापिता ब्रह्मा बच्चे ही पैदा करते या और भी कुछ करते हैं?भल आदि देवी सरस्वती आदि देव ब्रह्मा कहते हैं?परंतु पता किसको भी नहीं है कि क्या है। रचता है तो जरूर यहां होकर गया होगा। जरूर ब्रह्मा को शिवबाबा ने ही एडॉप्ट किया होगा। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आवे?यह नई बातें हैं ना। जब तक बाप नहीं आवे तब तक कोई जान नहीं सकते। जिनका जो पार्ट है वो ही बजाते हैं। बुद्ध ने क्या पार्ट बजाया किसी को भी पता नहीं है। कब आया, क्या आकर किया कोई नहीं जानते हैं। तुम अभी जानते हो कि बुद्ध ने क्या आकर किया है। क्या वो गुरू है?टीचर है?बाप है?नहीं। कुछ भी नहीं है। सदगति तो दे नहीं सकते। वो तो सिर्फ अपने धर्म के रचता ठहरे। गुरू नहीं। बाप बच्चों को रचता है। फिर पढ़ाते हैं। यह बाप, टीचर ,गुरू तीनों ही है। दूसरे को थोड़े ही कहेंगे कि तुम पढ़ाओ। और कोई पास यह नालेज है ही नहीं। बेहद का बाप ही ज्ञान का सागर है। उनकी ही महिमा गाई जाती है कि पवित्रता का सागर। सुख का सागर। और कोई को तुम ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। इनको भी नहीं कहेंगे सिवाय एक के। ज्ञान का सागर एक ही है तो जरूर ज्ञान वो ही सुनावेंगे। बाप ने ही स्वर्ग का राज्यभाग दिया था। बाप कहते हैं तुम फिर 5000वर्ष बाद आकर मिले हो। बच्चे भी कहते हैं कि बाबा हम आपसे अनेक बार मिले हैं। तो कितनी ...खुशी रहनी चाहिए। जिनको सारी दुनियां ढूंढती रहती है वो तुमको मिल गया है। कितना भी कोई मारे–पीटे अंदर में तो वो खुशी है ना। शिवबाबा से मिलने की याद तो आवेगी ना। याद से ही सारे पाप कटते हैं। अबलाओं ,बांधेलियों के तो और ही जास्ती कटते हैं ;क्योंकि वो शिवबाबा को जास्ती याद करती हैं। अत्याचार होते हैं तो बुद्धि शिवबाबा तरफ चली जाती है। शिवबाबा रक्षा करो। तो याद करना अच्छा है ना। रोज मार खाओ शिवबाबा को तो याद करेंगे ना। अबलाओं पर अत्याचार गाया हुआ है। मुक्का लगता है तो याद तो करते हैं ना। कहते भी हैं ना गंगाजल मुख में हो गंगा का तट हो तब प्राण तन से निकले। जब मार मिलती है तो तुमको अल्फ और बे ही याद आता है। बस। बाबा कहने से जरूर वर्सा याद आवेगा। ऐसा कोई जनावर भी नहीं होगा जिनको बाबा कहने से वर्सा याद नहीं पड़ता हो। (यह मुरली यहां तक ही थी)